त्रिगुणातीत निर्विशेष रूपी विपरीत निर्णय पर पहुँच सकते हैं अथवा कोई मनमानी कल्पना कर सकते हैं; परन्तु ऐसी मूर्खतापूर्ण मनोधर्मी से श्रीकृष्ण को कभी नहीं जाना जा सकता।

इस कथन के रूप में मानो श्रीभगवान् परतत्त्व के जिज्ञासुओं का आह्वान करते हुए कह रहे हैं, 'यहाँ विद्यमान मैं भगवान् ही परमसत्य हूँ।' सत्य जानना नितान्त आवश्यक है। साक्षात् विराजमान अचिन्त्य शक्तिशाली श्रीभगवान् होते हुए भी चाहे उनका तत्त्व साधारण मनुष्य न समझ पायें; पर फेर भी उनका अस्तित्व तो है ही। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता और श्रीमद्‌भागवत रूपी श्रीभगवान् के वचनामृत में अवगाहन करने मात्र से श्रीकृष्ण के सच्चिदानन्द तत्त्व का साक्षात्कार हो जाता है। शुद्धसत्त्व में स्थित हुए बिना श्रीभगवान् का तत्त्वबोध नहीं हो सकता, जबकि निर्विशेष ब्रह्म की अनुभूति तो मायामोहित मनुष्यों को भी हो जाया करती है।

अधिकांश मनुष्यों के लिए श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानना सम्भव नहीं है। अतएव अपनी अहैतुकी करुणा से प्रेरित हुए भगवान् इन मनोधर्मियों को निरवधि कृपा-कादम्बिनी से आप्यायित करने के लिए अवतीर्ण होते हैं। परन्तु श्रीभगवान् की परम विलक्षण लीलाओं को देखने पर भी ये मनोधर्मी माया-संसर्ग से उत्पन्न दोषवश निर्विशेष ब्रह्म को ही परात्पर मानते हैं। एकमात्र पूर्ण शरणागत भगवद्‌भक्त भगवत्-कृपा से जान सकते हैं कि श्रीकृष्ण परात्पर हैं। भक्त ईश्वर की निर्विशेष ब्रह्म धारणा को बिल्कुल ठुकरा देते हैं; उनकी श्रद्धा और भक्तिभावना उन्हें तुरन्त श्रीकृष्ण की शरण में पहुँचा देती है; श्रीकृष्ण की अहैतुकी कृपा से वे उन्हें जान जाते हैं। दूसरा कोई उन्हें नहीं जान सकता। अतएव महर्षिजन भी आत्मा और परतत्त्व के स्वरूप के सम्बन्ध में एकमत हैं। वस्तुतः श्रीकृष्ण ही सबके आराध्य हैं।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।३।।

यः=जो; **माम्**=मुझे; **अजम्**=अजन्मा; **अनादिम्**=अनादि; **च**=तथा; **वेत्ति**=जानता है; **लोकमहेश्वरम्**=सम्पूर्ण लोकों का परमेश्वर; **असंमूढः**=ज्ञानी (है); **सः**=वह; **मर्त्येषु**=मनुष्यों में; **सर्वपापैः**=सब पापों से; **प्रमुच्यते**=मुक्त हो जाता है।

अनुवाद

जो मुझे अजन्मा अनादि और सम्पूर्ण लोकों का परमेश्वर तत्त्व से जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानी पुरुष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।।३।।

तात्पर्य

सातवें अध्याय में उल्लेख के अनुसार, परमार्थ के पथ पर अग्रसर होने के लिये प्रयत्न करने वाले मनुष्य साधारण नहीं होते। वे उन करोड़ों मनुष्यों से कहीं श्रेष्ठ हैं, जिन्हें भगवत्प्राप्ति का कोई बोध नहीं है। अपने दिव्य स्वरूप को जानने में तत्पर हुए इन साधकों में जो पुरुष वास्तव में जानता है कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान्, सब लोकों